



## संसार

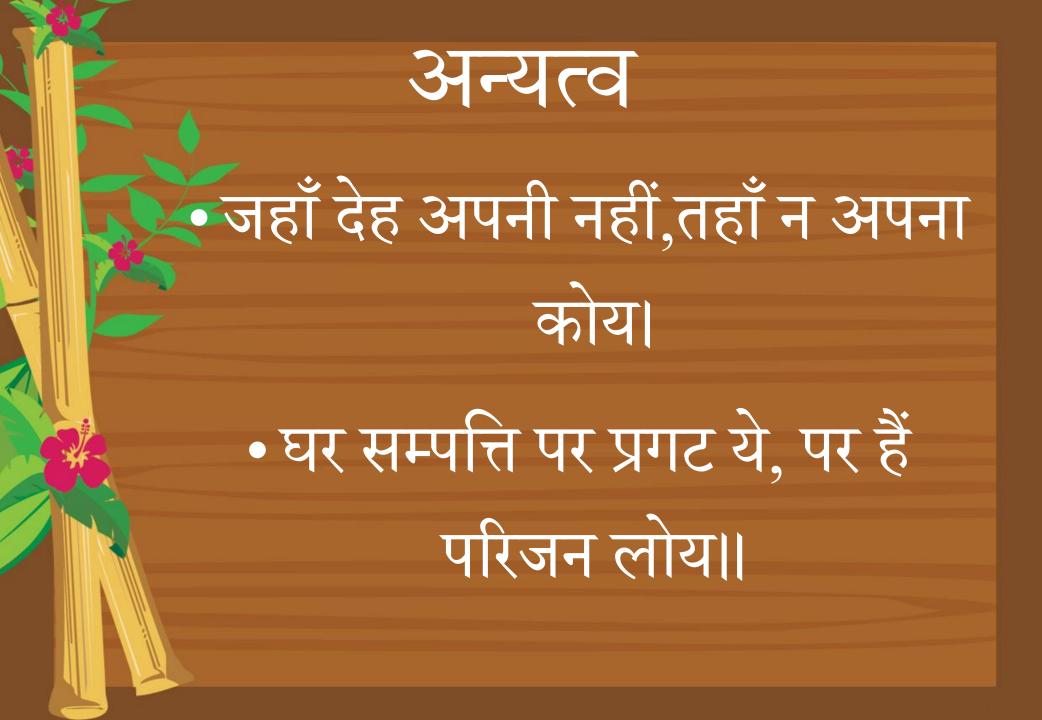
- दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।

• कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान॥

# एकत्व अभला अवतरे

आप अकेला अवतरे, मरै अकेला होय।

• यो कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय॥



# अशुचि

• दिपै चाम-चादरमढ़ी, हाड़ पींजरा देह।

• भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह॥

#### आस्रव

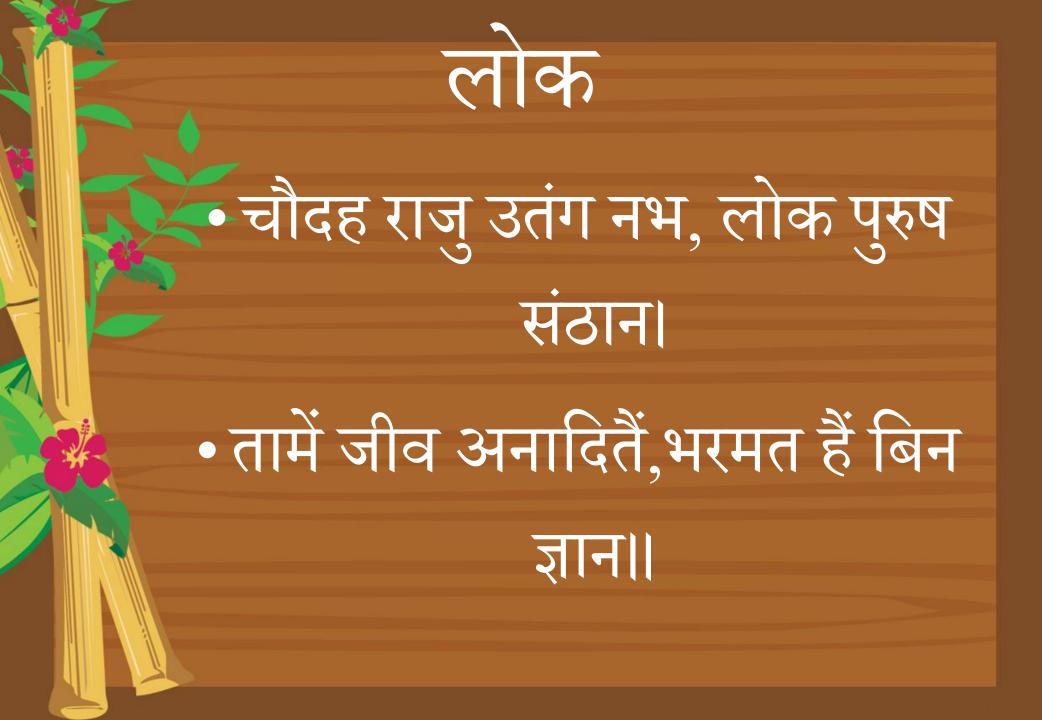
• मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।

• कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं॥

### संवर

- सत्गुरु देय जगाय, मोहनींद जब उपशमें।
- तब कछु बनहिं उपाय, कर्म चोर आवत रुकै॥
- ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
- या विधि बिन निकसैं नहीं, पैठे पूरबचोर॥







• धन कन कंचन राजसुख,सबहि सुलभकर जान।

• दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान॥

